MAKHANLAL CHATURVEDI NATIONAL UNIVERSITY OF JOURNALISM AND COMMUNICATION

// UNIVERSITY LIBRARY //

-: NEWS CLIPPING SERVICE -:

DATE:11 MAY 2026

तीन दिन में देशभर के 60 से अधिक पत्रकारों ने विभिन्न विषयों पर किया विमर्श

भारतीय वांग्मय में हैं सुशासन के सूत्र : डॉ. द्विवेदी

■ अब कोलकाता जाकर करेंगे उदन्त मार्तण्ड को प्रणाम : तिवारी

स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल

भारत भवन में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास की संयुक्त पहल पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श 'प्रणाम उदन्त मार्तण्ड' में 'स्वाभिमानी भारत' विषय पर प्रख्यात फिल्म निर्माता एवं अभिनेता डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने कहा कि भारतीय वांग्मय में सुशासन को लेकर क्या उल्लेख आया है। रामायण में श्रीराम ने

भरत से 88 प्रश्न किए हैं, जो सुशासन के प्रश्न हैं। उसमें एक प्रश्न यह भी है कि भरत तुम्हारे राज्य में रिश्वत लेकर अपराधी को छोड़ तो नहीं दिया जाता? क्या आपके राज्य में किसान केवल वर्षा के पानी पर निर्भर तो नहीं? महाभारत में भी इस प्रकार के प्रश्न ऋषि पूछते दिखाई देते हैं। देवर्षि नारद ने महाराज युधिष्ठर ने ऐसे कई प्रश्न पूछे जो सुशासन के प्रश्न हैं। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार हितेश शंकर ने कहा कि अनुभव नहीं है तो आविष्कार नहीं है, आविष्कार नहीं है तो शब्द नहीं है।

संवेदना के स्तर पर एक हैं हमारी भाषाएं : डॉ. चौबे

'प्रणाम उदन्त मार्तण्ड' में 'भारतीय भाषाओं का राष्ट्रीय स्वर' पर परिचर्चा का आयोजन हुआ, जिसमें वरिष्ठ हर्षवर्धन त्रिपाठी, जयंती रंगनाथन, डॉ. कृपाशंकर चौबे और शैलेश पांडेय ने अपने विचार रखे। संचालन वरिष्ठ पत्रकार अनिल पांडेय ने किया। डॉ. कृपाशंकर चौबे ने कहा कि भारत की भाषाओं के बीच सेतु बंधन है। उन्होंने अनेक उदाहरण देकर बताया कि अन्य भाषा के पत्रकारों ने किस तरह हिंदी को समृद्ध किया है।

पत्रकारिता में हो असहमति का सौंदर्य : पांडेय

वरिष्ठ पत्रकार शैलेश पांडेय ने कहा कि हमारी सभी भाषाओं की पत्रकारिता का स्वर राष्ट्रीयता का है। पत्रकारिता की प्राथमिकता हाशिये पर खड़ा व्यक्ति होना चाहिए। भारत की पत्रकारिता की चुनौतियों की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा कि आज हमने असहमति का सौंदर्य और चिकित्सकीय (सुधार) की दृष्टि खो दी है। विश्वसनीयता का संकट खड़ा हो गया है। सत्र में वरिष्ठ पत्रकार हर्षवर्धन त्रिपाठी, सुश्री जयंती रंगनाथन, प्रतीक त्रिवेदी, राशिद किदवई, अनिल पांडेय, अनुज खरे ने अपने विचार प्रकट किए। एक विशेष सत्र में विद्वानों ने 'भारतीय पत्रकारिता के स्वर्णिम पृष्ठ' पर अपने विचार प्रकट करने के साथ ही श्री विजयदत्त श्रीधर के ग्रंथ 'समग्र भारतीय पत्रकारिता' पर भी चर्चा की गई।

अब कोलकाता जाकर उदन्त मार्तण्ड को करेंगे प्रणाम : तिवारी

कार्यक्रम के समापन सत्र में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि भारत भवन में तीन दिन से चल रहे राष्ट्रीय संविमर्श 'प्रणाम उदन्त मार्तण्ड' का आज समापन नहीं है, बल्कि एक विराम है। अब हम उदन्त मार्तण्ड को प्रणाम करने के लिए इस कार्यक्रम को लेकर उसके जन्म की भूमि पश्चिम बंगाल (कोलकाता) जाएंगे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SWADESH'11 MAY.2026

आयोजन

भारत भवन में गूंजे भारतीय पत्रकारिता के स्वर, प्रणाम उदन्त मार्तण्ड कार्यक्रम का समापन

भारतीय वांग्मय में हैं सुशासन के सूत्र : डॉ. चंद्रप्रकाश

भोपाल / राज न्यूज नेटवर्क

जो सोचता है, वह मनुष्य है और जो देता है, वह देवता है।भारत भवन में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श प्रणाम उदन्त मार्तण्ड के समापन सत्र में फिल्म निर्माता एवं अभिनेता डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने भारतीय वांग्मय, सुशासन और मानवीय मूल्यों पर केंद्रित अपने वक्तव्य में यह बात कही। उन्होंने रामायण में श्रीराम द्वारा भरत से पूछे गए 88 प्रश्नों और महाभारत में युधिष्ठिर से पूछे गए प्रश्नों का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय परंपरा में सुशासन, लोककल्याण और जवाबदेही के स्पष्ट सूत्र मौजूद हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास की संयुक्त पहल पर आयोजित इस संविमर्श में तीन दिनों तक पत्रकारिता, भारतीय भाषाओं, एआई, लोकतंत्र और मीडिया की चुनौतियों पर गहन विमर्श हुआ।

अनुभव नहीं तो आविष्कार नहीं, आविष्कार नहीं तो शब्द नहीं

रविवार को संविमर्श में भारतीय भाषाओं की संवेदना और पत्रकारिता की भूमिका पर वक्ताओं ने विचार रखे। वरिष्ठ पत्रकार हर्षवर्धन त्रिपाठी ने कहा कि इस देश में भाषाएं मुद्दा नहीं, भाव मुद्दा है और भारतीय परंपरा संवाद की संस्कृति पर आधारित है। डॉ. कृपाशंकर चौबे ने कहा कि भारतीय भाषाएं संवेदना के स्तर पर एक हैं और स्वतंत्रता आंदोलन में सभी भाषाओं की पत्रकारिता ने समान भूमिका निभाई। वरिष्ठ पत्रकार शैलेश पांडेय ने कहा कि आज लोकतंत्र को जीवंत बनाए रखने के लिए असहमति का सौंदर्य जरूरी है। वहीं वरिष्ठ पत्रकार हितेश शंकर ने शब्दों और संस्कृति के संबंध को रेखांकित करते हुए कहा कि अनुभव नहीं है तो आविष्कार नहीं है, आविष्कार नहीं है तो शब्द नहीं है।

मौलिक कंटेंट का अपना महत्व, अनुभव का विकल्प तकनीक नहीं हो सकती

डिजिटल मीडिया और एआई के दौर में पत्रकारिता की विश्वसनीयता और मौलिकता पर वरिष्ठ पत्रकारों ने चर्चा की। राशिद किदवई ने कहा कि पत्रकारों को अपनी ख्वाहिश को खबर का रंग नहीं देना चाहिए, क्योंकि इससे विश्लेषण प्रभावित होता है। अनुज खरे ने कहा कि एआई के दौर में भी मौलिक कंटेंट का महत्व बना रहेगा, क्योंकि अनुभव आधारित पत्रकारिता का विकल्प तकनीक नहीं हो सकती। अनिल पांडेय ने पेड न्यूज को खतरा बताते हुए तीसरे प्रेस आयोग की आवश्यकता जताई। समापन सत्र में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने अपने विचार रखे।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'RAJ EXPRESS'11 MAY.2026

देश के अन्य राज्यों में होगा प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड का आयोजन

हिन्दू परंपरा संवाद की बात करती है, विवाद की नहीं: हर्षवर्धन त्रिपाठी

रिपोर्टर • IamBhopal
Mobile no. 9827080406

भारत भवन में कार्यक्रम का समापन

भारत भवन में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास की संयुक्त पहल पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श 'प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड' में वरिष्ठ पत्रकार हितेश शंकर ने शब्दों के निर्माण और उनके पीछे की संस्कृति को समझाते हुए कहा कि अनुभव नहीं है तो आविष्कार नहीं है, आविष्कार नहीं है तो शब्द नहीं है। रूस में पंखे के लिए कोई शब्द नहीं है क्योंकि वहां गर्मी नहीं है। इसी प्रकार अंग्रेजी में घी के लिए कोई शब्द नहीं है। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि 'प्रणाम उदन्त मार्त्तण्ड' को हम पश्चिम बंगाल लेकर जाएंगे। इसके बाद बनारस, लखनऊ सहित उन सभी स्थानों पर जाकर यह समारोह करेंगे, जहां से निकले समाचार पत्रों ने स्वतंत्रता के संघर्ष में योगदान दिया है।

वरिष्ठ पत्रकार हर्षवर्धन त्रिपाठी ने कहा कि हम जिस हिन्दू परंपरा से आते हैं, वह संवाद की बात करती है, विवाद की नहीं। वरिष्ठ पत्रकार जयंती रंगनाथन ने पत्रकारिता के अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि मेरी मातृभाषा तमिल है लेकिन अन्य भारतीय भाषाओं ने भी मेरी पत्रकारिता को ताकत दी है। मैंने हिंदी के प्रतिष्ठित पत्र धर्मयुग से अपनी पत्रकारिता की। वरिष्ठ पत्रकार प्रतीक त्रिवेदी ने कहा कि हमें पत्रकारिता में कम बोलना, सार्थक बोलना और अपने बनाए नियम का पालन करना चाहिए। वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक राशिद किदवई ने कहा एआई वही कंटेंट दे सकता है, जो इंटरनेट पर उपलब्ध है।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'PEOPALS SAMACHAR'11 MAY.2026

राष्ट्रीय संविमर्श 'प्रणाम उदन्त मार्तण्ड' का समापन

'जो देता है, वो देवता है' : डॉ. द्विवेदी

पत्रिका plus रिपोर्टर
patrika.com

भोपाल. भारत भवन में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास की संयुक्त पहल पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श 'प्रणाम उदन्त मार्तण्ड' में 'स्वाभिमानी भारत' विषय पर फिल्म निर्माता एवं अभिनेता डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने मनुष्य और देवता को परिभाषित करते हुए कहा कि जो सोचता है, वह मनुष्य है। जो देता है, वह देवता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य दान देता है। देवता अपनी इच्छाओं का दमन करते हैं। दानवों से कहा गया है कि प्राणियों पर दया करो। दूसरों का धन, सुख, चैन छीनों मत। उन्होंने कहा कि हमारी जितनी भी व्यवस्थाएं हैं, वे मनुष्य को मांगने वाला बनाती हैं। इस दृष्टिकोण को बदलने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि सभी को बाणभट्ट की पुस्तक 'हर्ष चरित्र' पढ़ना चाहिए, जिसमें लोक सेवक का सटीक वर्णन किया गया है।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'PATRIKA'11 MAY.2026

भारत भवन में पत्रकारिता, लोकतंत्र और भारतीय विचार का महामंथन

आयोजन ● तीन दिवसीय राष्ट्रीय विमर्श 'प्रणाम उदंत मार्तंड' का समापन

नवदुनिया प्रतिनिधि,भोपाल: भारत भवन में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श 'प्रणाम उदंत मार्तंड' का रविवार को समापन हुआ। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) और वीर भारत न्यास की संयुक्त पहल पर आयोजित इस कार्यक्रम में देशभर से आए 60 से अधिक पत्रकारों, लेखकों, शिक्षाविदों और विचारकों ने भाग लेकर पत्रकारिता, भारतीय चिंतन, लोकतंत्र, सुशासन और स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारों की भूमिका जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर गहन विमर्श किया। कार्यक्रम में फिल्म निर्माता एवं अभिनेता डा. चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने भारतीय वांग्मय और सुशासन की अवधारणा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्तमान व्यवस्थाएं व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने के बजाय मांगने वाला बना रही हैं, जिसे बदलने की आवश्यकता है।

उन्होंने बाणभट्ट कृत हर्ष चरित्र का उल्लेख करते हुए लोकसेवक की भूमिका और आदर्श शासन व्यवस्था की चर्चा की। उन्होंने रामायण और महाभारत के उदाहरण देते हुए बताया कि भारतीय ग्रंथों में सुशासन के गहरे सूत्र मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीराम द्वारा भरत से पूछे गए 88 प्रश्न आज भी सुशासन के मानक हैं। कार्यक्रम में वरिष्ठ पत्रकार हितेश शंकर, जयंती रंगनाथन, शरद गुप्ता, वरिष्ठ पत्रकार, लेखक राशिद किदवई सहित अनेक गणमान्य पत्रकार और साहित्यकार उपस्थित रहे।

हिंदी पत्रकारिता ने भारतीय चेतना को दी मजबूत आवाज: 'समग्र भारतीय पत्रकारिता' के लेखक विजयदत्त श्रीधर ने कहा कि इस पुस्तक के निर्माण में पुस्तक के निर्माण में विश्वविद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने बताया कि भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता पर विश्वविद्यालय द्वारा शुरू की गई परियोजना के अंतर्गत कई महत्वपूर्ण शोध और कार्य हुए।

उन्होंने कहा कि भारतीय पत्रकारिता में प्रारंभ से ही प्रतिरोध का स्वर रहा है और भाषायी पत्रकारिता की शुरुआत हिंदुस्तानियों के हित के हेत के उद्देश्य के साथ हुई। उन्होंने कहा कि खोजी पत्रकारिता की परंपरा भी भारत में पुरानी है, जिसके संकेत गणेश शंकर विद्यार्थी के समाचार पत्र प्रताप में मिलते हैं। हिंदी पत्रकारिता का योगदान सबसे अधिक रहा है।

अब कोलकाता जाकर उदंत मार्तंड को करेंगे प्रणाम: कार्यक्रम के समापन सत्र में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने, कहा कि 'प्रणाम उदंत मार्तंड' का आज समापन नहीं है, बल्कि एक विराम है। अब हम उदंत मार्तंडको प्रणाम करने के लिए इस कार्यक्रम को लेकर उसके जन्म की भूमि पश्चिम बंगाल (कोलकाता) जाएंगे। इसके बाद बनारस, लखनऊ सहित उन सभी स्थानों पर जाकर यह समारोह करेंगे, जहां से निकले समाचार पत्रों ने स्वतंत्रता के संघर्ष में योगदान दिया है।

भारत भवन में एमसीयू और वीर भारत न्यास द्वारा 'प्रणाम उदंत मार्तंड' शीर्षक से तीन दिवसीय राष्ट्रीय विमर्श समारोह के समापन अवसर पर सांस्कृतिक संध्या में देवास के भुवनेश कोमकली द्वारा निर्गुण गायन की प्रस्तुति दी गई। ● नवदुनिया

उदंड मार्तंड के दोपहर के सत्र में मंचासीन वक्तागण। ● नवदुनिया

कार्यक्रम में वक्तव्य देते विजयदत्त श्रीधर।

विदेशों में हिंदी पत्रकारिता का इतिहास 143 वर्ष पुराना है: जवाहर कर्नावट

विदेश में हिंदी पत्रकारिता के इतिहास पर शोध करने वाले जवाहर कर्णावट ने कहा कि विदेशों में हिंदी पत्रकारिता का इतिहास 143 वर्ष पुराना है। उन्होंने बताया कि उदन्त मार्तण्ड हिंदुस्तानियों के हित के उद्देश्य से शुरू हुआ था, इसलिए अंग्रेज उसके विरोध में थे। उस दौर में हिंदी सत्ता के केंद्र में नहीं थी, जिससे उसका प्रभाव सीमित था। उन्होंने कहा कि पहले हवाई जहाजों में लोग केवल अंग्रेजी में बात करते थे और हिंदी भाषी संकोच में रहते थे, लेकिन अब स्थिति बदल गई है। आज अमेरिका जाने वाली उड़ानों में भी जगजीत सिंह की हिंदी ग़ज़लें सुनाई देती हैं, जो हिंदी की बढ़ती ताकत को दर्शाता है।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'NAVDUNIYA'11 MAY.2026

जो दूसरों को देता है वह देवता

प्रणाम उदन्त मार्तण्ड के समापन पर फिल्म निर्माता डॉ. द्विवेदी ने कहा

नवभारत प्रतिनिधि

भोपाल, 10 मई. क्या आपके राज्य में रिश्वत लेकर अपराधी को छोड़ तो नहीं दिया जाता, क्या किसान केवल बारिश के भरोसे तो नहीं है, भारत भवन के खचाखच भरे सभागार में जब प्रख्यात फिल्म निर्माता डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने रामायण में सुशासन पर श्रीराम के इन 88 सवालों का जिक्र किया तो पूरा हॉल मौन होकर सुशासन के भारतीय सूत्रों को सुनने लगा. अवसर था रविवार को भारत भवन में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श प्रणाम उदन्त मार्तण्ड के समापन का.

सत्र में माखनलाल पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि यह तीन दिन के विमर्श का अंत नहीं, बल्कि एक विराम है. अब उदन्त मार्तण्ड की गौरव गाथा को प्रणाम करने के लिए यह कारवां कोलकाता जाएगा, जहां इस समाचार पत्र का जन्म हुआ था.

पुस्तक समग्र भारतीय पत्रकारिता पर हुई चर्चा

एक विशेष सत्र में विजयदत्त श्रीधर की पुस्तक समग्र भारतीय पत्रकारिता पर चर्चा की गई. जयराम शुक्ल ने कहा कि श्रीधर जी बीते तीन दशकों से गूगल की तरह काम कर रहे हैं, जिन्होंने भारतीय पत्रकारिता का प्रामाणिक इतिहास सहेज लिया है. जवाहर कर्णावट ने विदेशों में हिंदी पत्रकारिता के 143 साल पुराने सफर की जानकारी दी. बता दें इस तीन दिवसीय आयोजन में देशभर के 60 से अधिक दिग्गजों ने हिस्सा लिया. वहीं छात्रों ने आयोजन में खुद का समाचार पत्र, बुलेटिन और पॉडकास्ट तैयार कर पत्रकारिता की बारीकियां सीखीं.

कार्यक्रम में डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने सुशासन के साथ साथ मनुष्य और देवता के अंतर को भी परिभाषित किया. उन्होंने कहा कि जो सोचता है वह मनुष्य है और जो दूसरों को देता है वह देवता है. उन्होंने कहा कि हमारी व्यवस्थाएं मनुष्य को मांगने वाला बना रही हैं, जबकि भारतीय वांग्मय उसे लोक सेवक बनने की प्रेरणा देता है. इसी सत्र में वरिष्ठ पत्रकार हितेश शंकर ने शब्दों और संस्कृति के गहरे रिश्ते को समझाते हुए कहा कि जहां अनुभव नहीं होता, वहां शब्द भी पैदा नहीं होते.

संविमर्श के विभिन्न सत्रों में पत्रकारिता के बदलते स्वरूप पर भी तीखी और सार्थक बहस हुई. वरिष्ठ पत्रकार राशिद किदवई ने कहा कि पत्रकार जब अपनी ख्वाहिश को खबर का रंग देने लगते है तो गलती की गुंजाइश बढ़ जाती है. उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि एआई कभी भी मानवीय अनुभव का विकल्प नहीं हो सकता.

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'NAVBHARAT'11 MAY.2026

भारत भवन में तीन दिनी समारोह 'प्रणाम! उदन्त मार्त्तण्ड' का समापन

रामायण और महाभारत में छुपे हैं सुशासन के सूत्र: चंद्रप्रकाश

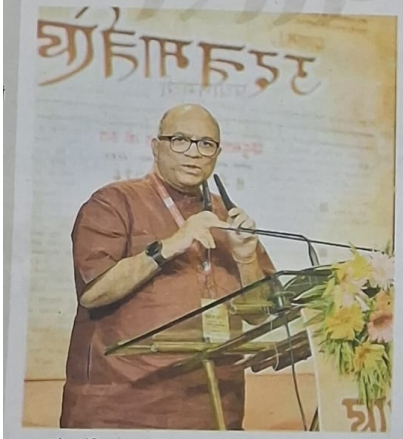

सांस्कृतिक प्रस्तुति के तहत भुवनेश कोमकली का निर्गुण गायन हुआ।

पत्रकारिता में कम लेकिन सार्थक बोलें: प्रतीक

स्वदेश ज्योति संवाददाता भोपाल

हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने के प्रसंग पर भारत भवन में आयोजित तीन दिनी समारोह 'प्रणाम! उदन्त मार्त्तण्ड' का रविवार को समापन हुआ। अंतिम दिवस विभिन्न विषयों पर चार वैचारिक सत्र हुए तथा शाम को सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के तहत भुवनेश कोमकली का निर्गुण गायन हुआ। तीन दिवसीय समारोह का आयोजन माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास द्वारा साझा तौर पर किया गया था। रविवार को हुए सत्रों में 'स्वाभिमानी भारत' विषय पर प्रख्यात फिल्म निर्माता एवं अभिनेता डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने कहा कि हमारी जितनी भी व्यवस्थाएं हैं, वे मनुष्य को मांगने वाला बनाती हैं। इस दृष्टिकोण को बदलने की आवश्यकता है। उन्होंने बाणभट्ट की पुस्तक 'हर्ष चरित्र' पढ़ना चाहिए, जिसमें लोक सेवक का सटीक वर्णन किया गया है। भारतीय वांग्मय में सुशासन के उल्लेख करते हुए कहा कि रामायण में श्रीराम ने भरत से 88 प्रश्न किए हैं, जो सुशासन के प्रश्न हैं। उसमें एक प्रश्न यह भी है कि भरत तुम्हारे राज्य में रिश्वत लेकर अपराधी को छोड़ तो नहीं दिया जाता? क्या आपके राज्य में किसान केवल वर्षा के पानी पर निर्भर तो नहीं? महाभारत में भी इस प्रकार के प्रश्न ऋषि पूछते दिखाई देते हैं। देवर्षि नारद ने महाराज युधिष्ठर ने ऐसे कई प्रश्न पूछे जो सुशासन के प्रश्न हैं। इसी सत्र में वरिष्ठ पत्रकार जितेश शंकर ने शब्दों के निर्माण और उनके पीछे की संस्कृति को समझाते हुए कहा कि अनुभव नहीं है तो आविष्कार नहीं है, आविष्कार नहीं है तो शब्द नहीं है। रूस में पंखे के लिए कोई शब्द नहीं है क्योंकि वहां गर्मी नहीं है। इसी प्रकार अंग्रेजी में घी के लिए कोई शब्द नहीं है। उन्होंने कहा कि पश्चिम अध्ययन करते समय भारत की दृष्टि रखना चाहिए। हमारे समाज की जो परंपराएं हैं, वो हमें कुछ सिखाती हैं।

संवेदना के स्तर पर सभी भाषाएं एक: डॉ. चौबे

समापन दिवस का एक सत्र भारतीय भाषाओं का राष्ट्रीय स्वर' पर परिचर्चा का भी था। जिसमें हर्षवर्धन त्रिपाठी, जयंती रंगनाथन, डॉ. कृपाशंकर चौबे और श्री शैलेश पांडेय ने अपने विचार रखे। सत्र का संचालन वरिष्ठ पत्रकार अनिल पांडेय ने किया। डॉ. कृपाशंकर चौबे ने कहा कि भारत की भाषाओं के बीच सेतु बंधन है। हमारी सभी भाषाएं संवेदना के स्तर पर एक हैं। वरिष्ठ पत्रकार शैलेश पांडेय ने कहा कि जिस समय उदन्त मात्रण्ड का प्रकाशन हुआ तब हमारा संघर्ष अंग्रेजो से था और आज का संघर्ष लोकतंत्र को जीवत बनाये रखने का है। परिचर्चा में हिस्सा लेते हुए हर्षवर्धन त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय भाषाओं के राष्ट्रीय स्वर की बात करते हैं तो हमें आदि शंकर से शुरु करना चाहिए। आदिगुरु शंकर ने कहा कि देश को एक रखने के लिए चारो कोनों पर पीठ स्थापित करनी होगी। वरिष्ठ पत्रकार जयंती रंगनाथन ने पत्रकारिता के अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि मेरी मातृभाषा तमिल है लेकिन अन्य भारतीय भाषाओं ने भी मेरी पत्रकारिता को ताकत दी है।

'आत्मावलोकन और संकल्प' विषय पर हुए सत्र में वरिष्ठ पत्रकार प्रतीक त्रिवेदी ने कहा कि हमें पत्रकारिता में कम बोलना, सार्थक बोलना और अपने बनाये नियम का पालन करना चाहिए। टेलीविजन ड्रामा मांगता है, इसलिए अपने विषय की प्रस्तुति पर भी ध्यान रखना चाहिए। पत्रकार एवं लेखक राशिद किदवई ने कहा कि हम पत्रकारों को अपना आत्मावलोकन करना चाहिए। जब हम अपनी खाहिश को खबर का रंग देते हैं तो हमारे गलत होने की संभावनाएं बढ़ जाती है। पत्रकार अनिल पांडेय का कहना था कि डिजिटल पत्रकारिता में एक हिस्सा पूरी तरह पेड न्यूज से प्रभावित है। आज से 10-15 वर्ष पहले जब पेड न्यूज के खतरे की बात हो रही थी, वह अब बढ़ रहा है। इस खतरे को समाप्त करने के प्रयास होना चाहिए। अनुज खर का मत था कि एआई कंटेंट के समय में भी मौलिक कंटेंट की आवश्यकता और महत्व बहुत अधिक है। कंटेंट बनाने वालों को आत्मावलोकन करना चाहिए कि वे क्या कंटेंट बना रहे हैं। 'भारतीय पत्रकारिता के स्वर्णिम पृष्ठ' पर केंद्रित विशेष सत्र में विजयदत श्रीधर के ग्रंथ 'समग्र भारतीय पत्रकारिता' पर भी चर्चा की गई। सत्र में अन्तरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्राध्यापक डॉ. कृपाशंकर चौबे ने कहा कि विजयदत श्रीधर ने तीन दशक के परिश्रम से भारतीय पत्रकारिता का दस्तावेजीकरण किया है। उनके पुस्तक में उदन्त मात्रण्ड से लेकर अहा ज़िंदगी तक का विवरण मिलता है। वहीं, वरिष्ठ पत्रकार जयराम शुक्ल ने कहा कि श्रीधर जी तीन दशक से गूगल का काम कर रहे हैं। विदेश में हिंदी पत्रकारिता के इतिहास पर शोध करने वाले जवाहर कर्णावट ने कहा कि विदेश में हिंदी पत्रकारिता के इतिहास को 143 वर्ष हो गए है। वहीं, उदन्त मार्तण्ड हिंदुस्तानियों के हित के हेत के उद्देश्य के साथ निकला इसलिए अंग्रेज उसके विरुद्ध थे। सत्र की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ पत्रकार प्रकाश हिंदुस्तानी ने हिंदी की शक्ति बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया। 'समग्र भारतीय पत्रकारिता' के लेखक विजयदत श्रीधर ने कहा कि भारत की पत्रकारिता में शुरू से प्रतिरोध का स्वर रहा है। हमारे यहां खोजी पत्रकारिता भी पहले से रही है। गणेश शंकर विद्यार्थी के समाचार पत्र 'प्रताप' में इसके संकेत मिलते हैं।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SWADESH JYPTI'11 MAY.2026

भारत भवन में सुशासन, पत्रकारिता, एआई और भारतीय भाषाओं पर तीन दिन चला राष्ट्रीय मंथन

अब कोलकाता तक जाएगा 'उदन्त मार्तण्ड' का कारवां

जागरण, भोपाल। भारत भवन के खचाखच भरे सभागार में जब प्रख्यात फिल्म निर्माता डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने रामायण के प्रसंगों के जरिए भगवान श्रीराम द्वारा पूछे गए सुशासन से जुड़े 88 सवालों का उल्लेख किया, तो पूरा हॉल भारतीय चिंतन और लोकनीति की गहराई में डूब गया। मौका था माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श 'प्रणाम उदन्त मार्तण्ड' के समापन का। समापन सत्र में कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने की सबसे महत्वपूर्ण घोषणा की, उन्होंने कहा कि अब 'उदन्त मार्तण्ड' की विरासत को नमन करने यह कारवां कोलकाता जाएगा, जहां हिंदी के पहले समाचार पत्र का जन्म हुआ था। इसके बाद बनारस और लखनऊ जैसे शहरों में भी आयोजन होंगे, जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पत्रकारिता के जरिए जनचेतना जगाई थी।

भाषाई एकता और पत्रकारिता के इतिहास पर चर्चा

भारतीय भाषाओं के राष्ट्रीय स्वर पर हुई चर्चा में डॉ. कृपाशंकर चौबे ने कहा कि भारत की सभी भाषाएं संवेदना के स्तर पर एक हैं। वरिष्ठ पत्रकार हर्षवर्धन त्रिपाठी ने भारत को सांस्कृतिक राष्ट्र बताते हुए कहा कि राष्ट्र भाषा से अधिक भाव महत्वपूर्ण है। वहीं जयंती रंगनाथन ने नई पीढ़ी को तकनीक के साथ अपनी जड़ों से जुड़े रहने की सलाह दी। एक विशेष सत्र में विजयदत्त श्रीधर की पुस्तक 'समग्र भारतीय पत्रकारिता' पर चर्चा हुई। वक्ताओं ने भारतीय पत्रकारिता के इतिहास को सहेजने में इस पुस्तक को महत्वपूर्ण दस्तावेज बताया। तीन दिवसीय आयोजन में देशभर के 60 से अधिक पत्रकार, संपादक और विचारकों ने हिस्सा लिया। छात्रों ने इस दौरान समाचार पत्र, बुलेटिन और पॉडकास्ट तैयार कर पत्रकारिता की व्यावहारिक बारीकियां भी सीखीं।

सुशासन और भारतीय मूल्यों पर गूंजे विचार

डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने कहा कि 'जो सोचता है वह मनुष्य है और जो दूसरों को देता है वह देवता।' उन्होंने कहा कि भारतीय परंपरा मनुष्य को केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि लोकसेवक बनने की प्रेरणा देती है। वरिष्ठ पत्रकार हितेश शंकर ने भाषा और संस्कृति के संबंधों पर बात करते हुए कहा कि जहां अनुभव नहीं होते, वहां शब्द भी जन्म नहीं लेते।

एआई, मीडिया की साख और बदलती पत्रकारिता पर बहस

संविमर्श के विभिन्न सत्रों में पत्रकारिता के बदलते स्वरूप और तकनीक की चुनौतियों पर चर्चा हुई। वरिष्ठ पत्रकार राशिद किदवई ने कहा कि पत्रकार जब अपनी इच्छाओं को खबर का रूप देने लगते हैं तो विश्वसनीयता प्रभावित होती है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि एआई कभी भी मानवीय अनुभव का विकल्प नहीं बन सकता। अनुज खरे ने डिजिटल मीडिया में मौलिक कंटेंट की चोरी पर चिंता जताते हुए सख्त कानूनों की जरूरत बताई। वहीं अनिल पांडेय ने पेड न्यूज के खतरे को देखते हुए तीसरे प्रेस आयोग की मांग रखी।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'DANIK JAGRAN'11 MAY.2026

तीन दिन में देशभर के 60 से अधिक पत्रकारों ने विभिन्न विषयों पर किया विमर्श

भारत भवन में जारी तीन दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श 'प्रणाम उदन्त मार्तण्ड' का समाहार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भोपाल

भारत भवन में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि और वीर भारत न्यास द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श 'प्रणाम उदन्त मार्तण्ड' में 'स्वाभिमानी भारत' विषय पर प्रख्यात फिल्म निर्माता एवं अभिनेता डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने मनुष्य और देवता को परिभाषित करते हुए कहा कि जो सोचता है, वह मनुष्य है। जो देता है, वह देवता है। उन्होंने उपनिषद की कथा 'द द द' सुनकर इस विषय को विस्तार दिया। उन्होंने कहा कि मनुष्य दान देता है। देवता अपनी इच्छाओं का दमन करते हैं। दानवों से कहा गया है कि प्राणियों पर दया करो। दूसरों का धन, सुख, चैन छीनों मत। उन्होंने कहा कि रामायण में श्रीराम ने भरत से 88 प्रश्न किए हैं, जो सुशासन के प्रश्न हैं।

विशेष परिशिष्ट उदन्त मार्तण्ड का लोकार्पण करते कुलपति विजय मनोहर तिवारी व अन्य पत्रकार।

अनुभव नहीं तो आविष्कार नहीं

इसी सत्र में वरिष्ठ पत्रकार हितेश शंकर ने शब्दों के निर्माण और उनके पीछे की संस्कृति को समझाते हुए कहा कि अनुभव नहीं है तो अविष्कार नहीं है, आविष्कार नहीं है तो शब्द नहीं है। रूस में पंखे के लिए कोई शब्द नहीं है क्योंकि वहां गर्मी नहीं है। शैलेश पांडेय ने कहा कि जिस समय उदन्त मार्तण्ड का प्रकाशन हुआ तब हमारा संघर्ष अंग्रेजों से था और आज का संघर्ष लोकतंत्र को जीवंत बनाये रखने का है। वहीं वरिष्ठ पत्रकार हर्षवर्धन त्रिपाठी ने कहा कि हम जिस हिन्दू परंपरा से आते हैं, वह संवाद की बात करती है, विवाद की नहीं। भारतीय भाषाओं के राष्ट्रीय स्वर की बात करते हैं तो हमें आदि शंकर से शुरू करना चाहिए।

निर्गुणी भजनों की सुर लहरियों में डूबा सभागार

वहीं, कार्यक्रम के अंत में भुवनेश कोमकली द्वारा निर्गुणी भजन की मनभावन प्रस्तुति दी गई। भक्ति, संगीत और आध्यात्म के अद्भुत संगम से सजी इस प्रस्तुति में वातावरण को पूरी तरह भक्तिमय बना दिया। सभागार में जैसे ही एकतारे और मंजीरों की मधुर ध्वनि गूंजी, श्रोता सुरों की अदृश्य दुनिया में खो गए।

तन्मयता के साथ भजन सुनते उपस्थित श्रोता।

निर्गुण भक्ति के भजन सुनाते भुवनेश कोमकली व साथी।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'HARIBHOOMI'11 MAY.2026

AI will reduce film production costs: Chandraprakash Dwivedi

Our Staff Reporter
BHOPAL

Film and television actor and Padma Shri recipient Chandraprakash Dwivedi said Artificial Intelligence (AI) will reduce the cost of film production.

While the use of visual effects (VFX) in cinema is not new, the future of the industry now hinges significantly on AI, he said, adding that the technology promises to streamline the filmmaking process considerably.

"Within a few years, actors may no longer need to travel to outdoor locations for shoots. Through virtual production techniques, exterior scenes can be captured independently. Subsequently, these 'plates' or background visuals can be integrated into studio setups, allowing actors to be seamlessly composited into the scenes.

This approach will effectively reduce the overall production costs of films," he added. Dwivedi was speaking to media persons on the sidelines of the event, Pranam Udant Martand, which concluded at Bharat Bhavan in the city on Sunday.

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'FREE PRESS'11 MAY.2026